तपोभूमि
卐 श्री करहधाम - स्तुति अंक 卐

श्रीराम स्तुति

जय जय सुरनायक जन सुखदायक प्रनतपाल भगवंता।
गो द्विज हितकारी जय असुरारी सिंधुसुता प्रिय कंता॥
पालन सुर धरनी अद्भुत करनी मरम न जानइ कोई।
जो सहज कृपाला दीनदयाला करउ अनुग्रह सोई॥
जय जय अबिनासी सब घट बासी व्यापक परमानंदा।
अबिगत गोतीतं चरित पुनीतं मायारहित मुकुन्दा॥
जेहि लागि बिरागी अति अनुरागी बिगत मोह मुनि बृन्दा।
निसि बासर ध्यावहिं गुन गन गावहिं जयति सच्चिदानंदा॥
जेहि सृष्टि उपाई त्रिविध बनाई संग सहाय न दूजा।
सो करउ अघारी चिंत हमारी जानिअ भगति न पूजा॥
जो भव भय भंजन मुनि मन रंजन गंजन बिपति बरुथा।
मन बच क्रम बानी छाड़ि सयानी सरन सकल सुर जूथा॥
सारद श्रुति सेषा रिषय असेषा जा कहुँ कोउ नहिं जाना।
जेहि दीन पिआरे बेद पुकारे द्रवउ सो श्रीभगवाना॥
भव बारिधि मंदर सब बिधि सुन्दर गुनमंदिर सुखपुंजा।
मुनि सिद्ध सकल सुर परम भयातुर नमत नाथ पद कंजा॥

जानि सभय सुर भूमि, सुनि बचन समेत सनेह।
गगनगिरा गंभीर भइ हरनि सोक संदेह॥

जय जय श्री सीताराम

जय रघुपति जन मन हारी सीताराम सीताराम।
जय दसरथ अजिर बिहारी सीताराम सीताराम॥
श्याम शरीर मुकुट सिर सोहे पीत वसन लखि मुनि मन मोहे।
जय जय अवध बिहारी सीताराम सीताराम॥
भूमि भार के टारन हारे कौशल्या के परम दुलारे।
धनुष बान कर धारी सीताराम सीताराम॥
विश्वामित्र यज्ञ रखवारे गौतम तिय के तारन हारे।
निज जन के सुखकारी सीताराम सीताराम॥
तोड़्यो धनुष शंभु को भारी सिय जयमाल राम उर डारी।
सुर नर मुनि जन हितकारी सीताराम सीताराम॥
केवट सों निज चरण धुवायो भक्त गीध निज धाम पठायो।
करुणा सिन्धु खरारि सीताराम सीताराम॥
बेर भीलनी के अति भाए परम प्रेम सों प्रभु जी ने पाए।
ऐसे प्रेम पुजारी सीताराम सीताराम॥
दीन सुकंठ मित्र प्रभु कीन्हा बाली मारि धाम निज दीन्हा।
भक्तन के भयहारी सीताराम सीताराम॥
भक्त विभीषण शरण में आयो रावण वध लंकेश बनायो।
दीनबन्धु असुरारी सीताराम सीताराम॥
राज सिंहासन शोभित कीन्हों पुरवासिन्ह को अति सुख दीन्हों।
जय श्रीसाकेत बिहारी सीताराम सीताराम॥
अब करुणामय करुणा कीजे दीन जनन को यह वर दीजे।
पावै भक्ति तुम्हारी सीताराम सीताराम॥
जो जन प्रभु के यह गुण गावै उनके मानस में श्रीहरि आवै।
होत हृदय सुख भारी सीताराम सीताराम॥
सीताराम सीताराम सीताराम जय सीताराम
राधेश्याम राधेश्याम राधेश्याम जय राधेश्याम।

श्रीराम स्तुति

जय जय सुरनायक जन सुखदायक प्रनतपाल भगवंता।
गो द्विज हितकारी जय असुरारी सिंधुसुता प्रिय कंता॥
पालन सुर धरनी अद्भुत करनी मरम न जानइ कोई।
जो सहज कृपाला दीनदयाला करउ अनुग्रह सोई॥
जय जय अबिनासी सब घट बासी व्यापक परमानंदा।
अबिगत गोतीतं चरित पुनीतं मायारहित मुकुन्दा॥
जेहि लागि बिरागी अति अनुरागी बिगत मोह मुनि बृन्दा।
निसि बासर ध्यावहिं गुन गन गावहिं जयति सच्चिदानंदा॥
जेहि सृष्टि उपाई त्रिविध बनाई संग सहाय न दूजा।
सो करउ अघारी चिंत हमारी जानिअ भगति न पूजा॥
जो भव भय भंजन मुनि मन रंजन गंजन बिपति बरुथा।
मन बच क्रम बानी छाड़ि सयानी सरन सकल सुर जूथा॥
सारद श्रुति सेषा रिषय असेषा जा कहुँ कोउ नहिं जाना।
जेहि दीन पिआरे बेद पुकारे द्रवउ सो श्रीभगवाना॥
भव बारिधि मंदर सब बिधि सुन्दर गुनमंदिर सुखपुंजा।
मुनि सिद्ध सकल सुर परम भयातुर नमत नाथ पद कंजा॥

जानि सभय सुर भूमि, सुनि बचन समेत सनेह।
गगनगिरा गंभीर भइ हरनि सोक संदेह॥

श्रीरामचन्द्र जी की प्रातःकालीन स्तुति

भए प्रगट कृपाला दीनदयाला कौशल्या हितकारी।
हरषित महतारी मुनि मन हारी अद्भुत रुप बिचारी॥
लोचन अभिरामा तनु घनश्यामा निज आयुध भुजचारी।
भूषन बनमाला नयन बिशाला सोभा सिंधु खरारी॥
कह दुइ कर जोरी अस्तुति तोरी केहि बिधि करौं अनंता।
माया गुन ग्यानातीत अमाना बेद पुरान भनंता॥
करुना सुखसागर सब गुन आगर जेहि गावहिं श्रुति संता।
सो मम हित लागी जन अनुरागी भयऊ प्रगट श्रीकंता॥
ब्रह्मांड निकाया निर्मित माया रोम रोम प्रति बेद कहै।
मम उर सो बासी यह उपहासी सुनत धीर मति थिर न रहै॥
उपजा जब ग्याना प्रभु मुस्काना चरित बहुत बिधि कीन्ह चहै।
कहि कथा सुहाई मातु बुझाई जेहि प्रकार सुत प्रेम लहै॥
माता पुनि बोली सो मति डोली तजहु तात यह रूपा।
कीजै सिसुलीला अति प्रियसीला यह सुख परम अनूपा॥
सुनि बचन सुजाना रोदन ठाना होइ बालक सुरभूपा।
यह चरित जे गावहिं हरिपद पावहिं ते न परहिं भवकूपा॥

बिप्र धेनु सुर सन्त हित, लीन्ह मनुज अवतार।
निज इच्छा निर्मित तनु, माया गुन गो पार॥

सियाबर रामचन्द्र की जय

श्रीकृष्ण स्तुति

भये प्रगट गोपाला दीनदयाला, यशुमति के हितकारी।
हर्षित महतारी रूप निहारी, मोहन मदन मुरारी॥
कंसासुर जाना मन अनुमाना, पूतना वेगि पठाई।
सो हर्षित धाई मन मुसकाई, गई जहाँ यदुराई॥
तेहि जाय उठायो हृदय लगायो, पयोधर मुख में दीना।
तब कृष्ण कन्हाई मन मुसकाई, प्राण तासु हर लीना॥
जब इन्द्र रिसायो मेघ पठायो, बस करि ताहि मुरारी।
गउअन हितकारी सुर मुनि झारी, नख पर गिरिवर धारी॥
कंसासुर मारेउ, अति अहंकारेउ, वत्सासुर संघारेउ।
बकासुर आयेउ बहुत डरायेउ, ताकर वदन विदारेउ॥
तेहि अति दीन जानी प्रभु चक्रपानी ताहि दियौ निज लोका।
ब्रह्मा शिव आए अति सुख पाए मगन भए गए शोका॥
यह छन्द अनूपा है रस रूपा, जो नर याको गावे।
तेहिसम नहिं कोई रामा त्रिभुवन सोई, मन वांछित फल पावे॥

नन्द यशोदा तप कियो, मोहन सों मनलाय।
देखन चाहत बाल सुख, रह्यो कछुक दिन जाय॥
जिन्ह नक्षत्र मोहन भयें सो नक्षत्र परे आय।
चारु बधाई रीति सो, करत यशोदा माय॥

श्रीजानकी जी की प्रातःकालीन स्तुति

भइ प्रगट कुमारी, ''भूमि बिदारी'', जन हितकारी भयहारी।
अतुलित छबिधारी मुनि मन हारी, जनकदुलारी सुकुमारी॥
सुन्दर सिंहासन तेहि पर आसन, कोटि हुतासन श्रुतिकारी।
शिर छत्र विराजै सखिगण भ्राजै, निज निज काजै करधारी॥
सुर सिद्ध सुजाना हनहिं निशाना, चढ़े विमाना समुदाई।
बरषहिं बहु फूला मंगल मूला, अनुकूला सिय गुन गाई॥
देखहि सब ठाढ़े लोचन गाढ़े, सुख बाढ़े उर अधिकाई।
अस्तुति मुनि करहीं, आनन्द भरहीं, पायन परहीं हरषाई॥
ऋषि नारद आये नाम सुनाये, सुनि सुख पाये नृप ज्ञानी।
''सीता'' अस नामा पूरन कामा, सब सुखधामा गुणखानी॥
सिय सन मुनिराई विनय सुनाई, समय सुहाई मृदु बानी।
लालनि तनु लीजै चरित सुकीजै, यह सुख दीजै नृपरानी॥
सुनि मुनिवर वानी ''सिय'' मुसकानी, लीला ठानी सुखदाई।
सोवत जनु जागी रोवन लागी, नृप बड़भागी उर लाई॥
दम्पति अनुरागेऊ प्रेम सुपागेऊ, तेहि सुख लागे मन लाई।
अस्तुति सिय केरी प्रेम लतेरी बरनि कुचेरी सिर नाई॥

निज इच्छा मख भूमि ते, प्रगट भई सिय आय।
चरित किये पावन परम, वर्धन मोद निकाय॥

श्री जगद्गुरु रामानन्दाचार्य जी महाराज की प्रातःकाल की स्तुति

भये प्रगट कृपाकर करुणा सागर श्री रामानन्द भगवाना।
रघुपति सम सुन्दर परम मनोहर प्रभु विज्ञान निधाना॥
संतन सुख दायक मुक्ति प्रदायक शान्ति सदन सुखराशी।
माया मद गंजन जन भय भंजन आचारज अविनाशी॥
पाखण्ड विनाशन तत्व प्रकाशन बन्दति जेहि मुनि ज्ञानी।
दीनन दुःख हारी अधम उधारी तेजोमय तप खानी॥
माता छवि देखी हर्ष विशेषी बार-बार बलि जाई।
मुख चन्द्र उजारी चितवन भारी बानिन बरनि न जाई॥
तनु शोभा सारं कान्ति अपारं तिलक चिन्ह युत भालम्।
मुसुकान रसालं नयन विशालं उर रंजित बन् मालम्॥
हर्षहिं सुर वृन्दा अतिहि आनन्दा वर्षहि सुर तरु फूला।
नभ दुन्दुभि बाजहि ऋषि गण गाजहि भा जग मंगल मूला॥

तीर्थ राज प्रयाग मँह, करण जगत कल्यान।
प्रगट भए श्री जगद्गुरु रामानन्द भगवान॥

श्री हनुमानजी के बारह नाम

हनुमान, अन्जनीसुनो, वायुपुत्रो, महाबलः,
रामेष्ट, फाल्गुनसखः, पिंगाक्षो, अमितविक्रमः,
उदध्धिक्रमणश्चैव, सीताशोकविनाशकः
लक्ष्मणश्च प्राणदाता, दशग्रीवस्दर्पहाः

श्रीराम वन्दना - श्लोक

नीलाम्बुजश्यामलकोमलाङ्गं, सीतासमारोपितवामभागम्।
पाणौ महासायक चारुचापं, नमामि रामं रघुवंशनाथम्॥
भवाब्धिपोतं भरताग्रजं तम्, भक्तिप्रियं भानुकुल प्रदीपम्।
भूतत्रिनाथं भुवनाधिपं तम्, भजामि रामं भवरोग वैद्यम्॥
लोकाभिरामं रणरंगधीरं, राजीवनेत्रं रघुवंशनाथम्।
कारुण्यरुपं करुणाकरं तम्, श्रीरामचन्द्रं शरणं प्रपद्ये॥
सखेति मत्वा प्रसभं यदुक्तं, हे कृष्ण हे यादव हे सखेति।
अजानता महिमानं तवेदं, मया प्रमादात्प्रणयेन वापि॥
त्वमेव माता च पिता त्वमेव, त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव, त्वमेव सर्वं मम देव देव॥

शान्ताकारं भुजगशयनं, पद्मनाभं सुरेशम्।
विश्वाधारं गगनसदृशं मेघवर्णं शुभाङ्गम॥
लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं, योगिभिर्ध्यानगम्यं।
वन्दे विष्णुं भवभयहरं सर्व लोकैकनाथम्॥

अच्युतं केशवं राम नारायणं, कृष्ण दामोदरं वासुदेवं हरिम्।
श्रीधरं माधवं गोपिकाबल्लभं श्रीजानकीनायकं श्रीरामचन्द्रंभजे॥

न धर्मनिष्ठोऽस्मि न चात्मवेदी,
न भक्तिमांस्त्वच्चरणारविन्दे।
अकिञ्चनोऽनन्यगतिः शरण्यं,
त्वत्पादमूलं शरणं प्रपद्ये॥

अपराधसहस्त्रभाजनं पतितं भीम भवार्णवोदरे।
अगतिं शरणागतं हरे कृपया केवलमात्मसात्कुरु॥

सायंकालीन श्रीराम स्तुति

श्रीरामचन्द्र कृपालु भजु मन हरण भव भय दारुणम्।
नवकंज लोचन, कंज मुख, कर कंज पद कंजारुणम्॥
कंदर्प अगणित अमित छबि, नवनील नीरद सुन्दरम्।
पटपीत मानहु तड़ित रुचि शुचि नौमि जनक सुतावरम्॥
भजु दीनबन्धु दिनेश दानव दैत्यवंश निकन्दनं॥
रघुनन्द आनन्दकंद कौशलचन्द दशरथ नन्दनं।
सिर मुकुट कुंडल तिलक चारु उदारू अंग विभूषणम्।
आजानुभुज शरचाप धर, संग्राम जित खरदूषणम्।
इति वदति तुलसीदास शंकर शेष मुनिमन रंजनं।
मम हृदय कंज निवास कुरु, कामादि खलदल गंजनं॥

श्री हनुमत स्तुति

मंगल-मूरति मारुत-नंदन। सकल-अमंगल-मूल-निकंदन॥
पवनतनय संतन-हितकारी। हृदय बिराजत अवध-बिहारी॥
मातु-पिता, गुरु, गनपति, सारद। सिवा-समेत संभु, सुक, नारद॥
चरन बंदि बिनवौं सब काहू। देहु रामपद-नेह-निबाहू॥
बंदौं राम-लखन-बैदेही। जे तुलसीके परम सनेही॥

सायंकालीन श्री जानकी स्तुति

जय जनकनन्दनी जगत वंदनि जनअनन्दनि श्रीजानकी
रघुबीर नयन चकोर चन्दनि वल्लभा प्रिय प्राण की।
तव कंजपद मकरंद स्वादित योगिजन मन अलि किये
करि पान गिनत न आनही निर्वानसुखं आनन्द हिये।
सुख खानि मंगलदानि जन प्रिय जानि शरण जो आत है
तव नाथ सब सुख साथ करि, तेहि हाथ रीझि बिकात है।
ब्रह्मादि शिव सनकादि सुरपति आदि निज मुख भाषहीं
तव कृपा नयनकटाक्ष चितवनि दिवस निशि अभिलाषहीं।
तनु पाय तुमहिं विहाय जड़मति आन देव जो सेवहिं
हतभाग सुरतरु त्याग करि अनुराग रेंड़हिं सेवहिं।
यह आस रघुवरदास की सुखराशि पूरण कीजिये
निज चरण कमल सनेह, जनक विदेहजा यह वर दीजिये।

मन जाहिं राचेउ मिलिहि सो बरू सहज सुन्दर साँवरो
करुना निधान सुजान शीलु सनेहु जानत रावरो।
एहि भाँति गौरि असीस सुनि सिय सहित हिय हरषीं अली
तुलसी भवानिहिं पूजि पुनि पुनि मुदित मन मन्दिर चली।

श्री जानि गौरि अनुकूल, सिय हिय हरषु न जाइ कहि।
मंजुल मंगल मूल वाम अंग फरकन लगे ॥

॥ दोहा ॥

1. मो सम दीन न दीन हित, तुम्ह समान रघुबीर।
अस बिचारि रघुबंश मनि, हरहु बिषम भव भीर॥
2. कामिहि नारि पिआरि जिमि, लोभिहि प्रिय जिमि दाम।
तिमि रघुनाथ निरन्तर, प्रिय लागहु मोहि राम॥
3. प्रनत पाल रघुबंशमनि, करुणसिंधु खरारि।
गये शरण प्रभु राखिहैं, तव अपराध बिसारि॥
4. श्रवन सुजसु सुनि आयउँ, प्रभु भंजन भव भीर।
त्राहि त्राहि आरति हरन, सरन सुखद रघुबीर॥
5. अरथ न धरम न काम रुचि, गति न चहउँ निरवान।
जनम जनम रति रामजी पद, यह बरदानु न आन॥
6. बार-बार बर मागऊँ, हरषि देहु श्रीरङ्ग।
पद सरोज अनपायनी, भगति सदा सत्संग॥
7. बरनि उमापति रामजी गुन, हरषि गए कैलास।
तब प्रभु कपिन्ह दिवाए, सब बिधि सुखप्रदबास॥
8. एकु मैं मन्द मोहबस, कुटिल हृदय अग्यान।
पुनि प्रभु मोहि बिसारेउ, दीनबन्धु भगवान॥
9. विनती करि मुनि नाइ सिरु, कह कर जोरि बहोरि।
चरन सरोरुह नाथ जनि, कबहुँ तजै मति मोरि॥

10. नहिं विद्या नहिं बाहु बल, नहिं खर्चन को दाम।
मोसे पतित पतंग की, तुम पति राखो राम॥

11. एकु छत्रु एकु मुकुटमनि, सब बरननि पर जोऊ।
तुलसी रघुबर नाम के, बरन बिराजत दोऊ॥

12. कोटि कल्प काशी बसे, मथुरा कल्प हजार।
एक निमिष सरयू बसै, तुलै न तुलसीदास॥

13. राम जी नगरिया राम की, बसे सरयू के तीर।
अचल राज महाराज को, चौकी हनुमत बीर॥

14. कहा कहौं छबि आज की, भले बिराजो नाथ।
तुलसी मस्तक तब नवै, धनुष बाण लेउ हाथ॥

15. कित मुरली कित चन्द्रिका, कित गोपियन को साथ।
अपने जन के कारने, श्रीकृष्ण भये रघुनाथ॥

16. चलो सखि तहाँ जाइये जहाँ बसें ब्रजराज।
गोरस बेंचत हरि मिले एक पंथ दोऊ काज॥

17. अवध धाम धामाधिपति, अवतारन पति श्रीराम।
सकल सिद्धि पति जानकी, दासन पति हनुमान॥

18. कर गहि धनुष चढ़ाइयो, चकित भये सब भूप।
मगन भई श्री जानकी, देखि रामजी को रूप॥

19. राम बाम दिशि जानकी, लखन दाहिनी ओर।
ध्यान सकल कल्यानमय, सुरतरु तुलसी तोर॥

20. नील सरोरुह नील मनि, नील नीरधर स्याम।
लाजहिं तन सोभा निरखि, कोटि-कोटि सत काम॥

21. श्रीगुरु मूरति मुख चन्द्रमा, सेवक नयन चकोर।
अष्ट पहर निरखत रहो, श्री गुरु चरनन की ओर॥

22. बनै तो रघुबर से बनै कै बिगरे भरपूर।
तुलसी औरन से बनै, बा बनवें मे धूर॥

23. अस प्रभु दीनबन्धु हरि, कारन रहित दयाल।
तुलसीदास सठ ताहिं भजु, छाँड़ि कपट जंजाल॥

24. एक घड़ी आधी घड़ी, आधी में पुनि आध॥
तुलसी संगति साधु की हरै, कोटि अपराध।

सियावर रामचन्द्र की जय, श्री अयोध्या राम जी लला की जय,
श्री पवनसुत हनुमान जी की जय, श्री उमापति महादेव जी की जय,
श्री रमापति रामचन्द्र जी की जय,
श्री वृन्दावन कृष्ण बलदाऊ जी की जय,
बोलो भाई सब संतन की जय,
अपने-अपने श्री गुरु महाराज की जय। जय जय सीताराम॥

श्री रामाष्टक

श्री अवधपुरी निज धाम कहिये निकट सरयू गंग है।
दशरथनन्दन असुर भंजन सिया रामजी पूरण ब्रह्म हैं॥
राघवरामजी पूरण ब्रह्म हैं॥

सहित सीता भ्रात लक्ष्मण धनुषधारीश्रीरामजी हैं।
चित्रकूट तप लोक कहिए, सियाराम जी पूरण ब्रह्म हैं।
राघवरामजी पूरण ब्रह्म हैं॥

भाल तिलक विशाल लोचन, आनंदकारी सीतारामजी है।
साँवली सूरति माधुरी मूरति, सियाराम जी पूरण ब्रह्म हैं।
राघवरामजी पूरण ब्रह्म हैं॥

लंका पुरी छिनमाहिं जारी आज्ञाकारी हनुमान जी हैं।
रावण मारि विभीषण थाप्यो, सियाराम जी पूरण ब्रह्म हैं।
राघवरामजी पूरण ब्रह्म हैं॥

अष्ट सिद्धि नवनिधि के दाता भक्ति मुक्ति वरदायकं।
ज्ञान जोग स्वरूप सुन्दर॥ सियाराम जी पूरण ब्रह्म हैं।
राघवरामजी पूरण ब्रह्म हैं॥

ब्रह्मा शेष महेश नारद कोटि अट्ठासी मुनि देवता।
इन्द्रादिक सनकादिक ध्यावै। सियाराम जी पूरण ब्रह्म हैं।
राघवरामजी पूरण ब्रह्म हैं॥

अनन्त कला युग चार प्रगटे सप्त द्वीप नव खण्ड हैं।
आदि अन्त मध्य खोजि देखो ॥ सियाराम जी पूरण ब्रह्म हैं।
राघवरामजी पूरण ब्रह्म हैं ॥
चेतन है छिनमांहि चेतो योग जुगत लीला रची।
सियारामहिं कर्ता सियारामहिं भर्ता सियाराम जी पूरण ब्रह्म हैं।
राघवरामजी पूरण ब्रह्म हैं ॥
श्रीराम जी अष्टक पढ़त निशिदिन, रामजी धाम सिधावहिं।
श्रीगुरु रामानन्द अवतार अनुपम, सियाराम जी पूरण ब्रह्म हैं।
राघवरामजी पूरण ब्रह्म हैं ॥

एक श्लोकी श्री रामायण जी

आदौ राम तपोवनादि गमनं हत्वा मृगं काञ्चनं।
वैदेही हरणं जटायु मरणं सुग्रीव सम्भाषणम्।
बालीनिग्रहणं समुद्र तरणं लङ्कापुरी दाहनम्।
पश्चाद् रावणकुम्भकर्णहननं एतद्धि रामायणम् ॥

एक श्लोकी श्री भागवत् जी

आदौ देवकिदेवगर्भजननं गोपीगृहे वर्धनम्।
माया पूतन जीव ताप हरणं गोवर्धनोद्धारणम् ॥
कंसच्छेदन कौरवादि हननं कुन्ती सुतान्पालनम्।
एतद् भागवतं पुराणकथितं श्रीकृष्ण लीलामृतम् ॥

अतुलित बलधामं हेमशेलाभदेहं,
दनुजवनकृशानुम् ज्ञानिनाम् अग्रगण्यम्।
सकलगुण निधानं वानरणामधीशं,
रघुपति प्रिय भक्तम् वातजातम् नमामि॥

वन्दे विदेहतनया पदपुण्डरीकं,
कैशोरसौरभसमाहृत-योगिचित्तम्।
हन्तुं त्रितापमनिशं मुनिहंससेव्यं
सन्मानशालि-परिपीत परागपुञ्जम्॥

ध्येयं सदापरिभवघ्नम अभीष्टदोऽहं,
तीर्थास्पदं शिवविरञ्चिनुतं शरण्यम्।
भृत्यार्तिहं प्रणतपाल भवाब्धिपोतं,
वन्दे महापुरुष ते चरणारविन्दम्॥

त्यक्त्वा सुदुस्त्यज सुरेप्सित राजलक्ष्मीं,
धर्मिष्ठ आर्यवचसा यदगादरण्यम्॥
मायामृगं दयितयेप्सितमन्व धावद्,
वन्दे महापुरुषं ते चरणारविन्दम्॥

श्री गुरु अष्टक

गुरुदेव पटिया वारे, गुरुदेव करह वारे,
मेरा कोई नहीं बिनु तेरे, दुःख दूर करो सब मेरे।

गुरुदेव त्रिदेव हैं इष्ट सदा गुरु मूरति मंगल कारिनी है।
चरणामृत पान कियो गुरु को ये ज्ञान और बुद्धि प्रकाशिनी हैं।
सेवा करो हरि संतन की गुरुदेव की सीख निभावनी है।
गुरुदेव के धाम की धूरि लगाइके नेत्र की ज्योति बढ़ावनी है ।।1 ।।

शरणागत जानि सदा अपनो कृपा करके अपनाइये जू।
तन भोगी है, रोगी है, मेरो प्रभु अपनो लखि न बिसराइये जू।
करुणाकर दीन दयाल है नाम करि सत्य सबै दिखराइये जू।
हरि नाम सजीवन मूरि अहै निशि बासर पान कराइये जू।। 2 ।।

दीनदयाल है नाम प्रभू, सो दया हम पे करिए करिए।
अघहारी नाम है सत्य करो संताप मेरे हरिए हरिए।
ज्ञान विराग अरू भक्ति मेरे उर अन्तर में भरिए भरिए।
शीश झुका पद पंकज में कर कंज सदा धरिए धरिए।। 3 ।।

सत्संग कथा हरि भक्तन की यह भूलहुँ नाथ छुड़ाइयो ना।
जो द्रोही अहैं हरि भक्तन के सपनेहुं तिन्हें पास न पठाइयो ना।
हम जीव हैं भूल करें तो करें पर आप कबहुँ बिसराइयो ना।
हम हैं तुम्हरे तुम हो हमरे गुरुदेव यह नातो भुलाइयो ना ।। 4 ।।

गुरुदेव के द्वार पै स्वान रहें वे चारों पदारथ पावत है।
राम कथा हरि नाम सुने सहजहि भवफंद छुड़ावत है।
झूठन पाय गुरु हरि की रसना रस पान करावत है।
गुरुदेव तुम्हारे द्वार पड़े तुम्हरोइ यश गान सुनावत हैं॥ 5॥

अंधकार में दिव्य प्रकाश करै गुरु शब्द को अर्थ बतावत हैं।
(जो) मोह निशा में सोए हुए तिन्ह को दे ज्ञान जगावत हैं।
मेरो कहा दुर्भाग्य अहै सब में नहीं राम लखावत हैं।
करुणा करके दुःख दूर करो विनती गुरुदेव सुनावत हैं॥6॥

देव सबै त्रैदेव सबै नरदेव सबै श्रुति संत बखानो।
मातु पिता हितु स्वामि सखा संबंध सबै गुरुदेव सों मानो।
नश्वर रूप हैं नाते सबैं श्रीगुरुदेव को सत्य सनातन जानो।
छोड़ि के द्वार श्रीगुरुदेव के और कहुं नहिं ठौर ठिकानो॥ 7॥

नर देह को पाइके प्रभु जी हमने सब भाँति को नाच है नांच्यो।
शांति कहीं सपनेहुँ न मिली सब देव कुदेवन सों बहु जांच्यो।
कीन्हों भरोसो अनेकन को निकसो सबको है अंत में कांच्यो।
और को आसरो फासरो खासरो आसरो श्रीगुरुदेव को सांच्यो॥ 8॥

अष्टक श्रीगुरुदेव को पढ़े सुने मन लाय।
(श्री) 'रामदास' श्रीगुरु देव जू करिहैं सदा सहा॥

श्रीराम चरित मानस पाठ प्रारंभ स्तुति

श्री गुरु चरन सरोज रज, निज मनु मुकुर सुधारि।
बरनउँ रघुवर बिमल जसु, जो दायक फल चारि।
बुद्धि हीन तनु जानिके, सुमिरौं पवन कुमार।
बल बुद्धि विद्या देहु मोहि, हरउ कलेश विकार।

राम कथाके रसिक तुम, भक्तराज मति धीर।
आय सुआसन करिय प्रभु, तेज पुँज महावीर।

तुलसी कृत रामायण, भाषेउ मति अनुसार।
आसन लीजै हृदय में, बिराजिये पवन कुमार।

भक्त भक्ति भगवंत गुरु, चतुर नाम वपु एक।
इनके पद बंदन किये, नासत विघ्न अनेक।

बंदउं तुलसी के चरण, जिन कीनौ जग काज।
कलि समुद्र बूढ़त लख्यौ, प्रगट्यों सप्त जहाज।

श्रीराम चरित मानस पाठ पूर्णता स्तुति

कथा विसर्जन होत है, सुनहु वीर हनुमान।
जो जन जहाँ से आयहुँ, सो तहँ करउ पयान॥

प्रभु सन कहियो दण्डवत, तुम्हँहि कहउँ कर जोरि।
बार बार रघुनायकहि, सुरति करायेहुं मोरि॥

जय जय सीताराम की, जय लक्ष्मण बलवान।
जय कपीश सुग्रीव की, कहत चलेउं हनुमान॥

राम लक्ष्मण जानकी, सदा करउँ कल्यान।
रामायण बैकुण्ठ में, शुभ स्थान हनुमान॥
अक्षर में और अर्थ में, भूल परि कछु होय।
आदि शक्ति भूधर सुता, क्षमा करहुँ अब मोय॥

बैनी सी पावन परम, दैनी है फल चार।
स्वर्ग नसैनी हरि कथा, नरक निवारन हार॥

अच्युतं केशवं रामनारायणं, कृष्ण दामोदरं वासुदेवं हरिम्।
श्रीधरं माधवं गोपिकावल्लभं, श्रीजानकी नायकं श्रीरामचन्द्रं भजे॥

आरती श्रीरामायण जी की

आरती श्रीरामायण जी की। कीरति कलित ललित सिय पिय की॥

गावत ब्रह्मादिक मुनि नारद। बाल्मीक विज्ञान विशारद॥
शुक सनकादि शेष अरू शारद। वरनि पवन सुत कीरति नीकी॥

गावत वेद पुरान अष्टदस। छहो शास्त्र सब ग्रन्थन को रस॥
मुनि जन धन संतन को सरबस। सार अंश सम्मत सबही की॥

गावत संतत शम्भु भवानी। अरु घट सम्भव मुनि विज्ञानी॥
व्यास आदि कविवर्ज बखानि। काग भुशुण्डि गरुड़ के हिय की॥

कलि मल हरनि विषय रस फीकी। सुभग श्रृंगार मुक्ति जुवती की॥
दलन रोग भव मूरि अमी की। तात मात सब विधि तुलसी की॥

श्रीराम-अष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम्।

श्रीरामो रामचन्द्रश्च रामभद्रश्च शाश्वतः। राजीवलोचनः श्रीमान् राजेन्द्रो रघुपुङ्गवः॥

जानकीवल्लभो जैत्रो जितामित्रो जनार्दनः। विश्वामित्रप्रियो दान्तः शरण्यत्राणतत्परः॥

बालिप्रमथनो वाग्मी सत्यवाक् सत्यविक्रमः। सत्यव्रतो व्रतफलः सदा हनुमदाश्रयः॥

कौसलेयः खरध्वंसी विराधवधपण्डितः। विभीषणपरित्राता दशग्रीवशिरोहरः॥

सप्ततालप्रभेत्ता च हरकोदण्डखण्डनः। जामदग्न्यमहादर्पदलनस्ताड़कान्तकृत्॥

वेदान्तपारो वेदात्मा भवबन्धैकभेषजः। दूषणत्रिशिरोऽरिश्च त्रिमूर्तिस्त्रिगुणस्त्रयी॥

त्रिविक्रमस्त्रिलोकात्मा पुण्यचारित्रकीर्तनः। त्रिलोकरक्षको धन्वी दण्डकारण्यवासकृत॥

अहल्यापावनश्चैव पितृभक्तो वरप्रदः। जितेन्द्रियो जितक्रोधो जितलोभो जगद्गुरुः॥

ऋक्षवानरसंघाती चित्रकूटसमाश्रयः। जयन्तत्राणवरदः सुमित्रापुत्रसेवितः॥

सर्वदेवाधिदेवश्च मृतवानरजीवनः। मायामारीचहन्ता च महाभागो महाभुजः॥

सर्वदेवस्तुतः सौम्यो ब्रह्मण्यो मुनिसत्तमः। महायोगी महोदारः सुग्रीवस्थिरराज्यदः॥

सर्वपुण्याधिकफलः स्मृतसर्वाघनाशनः। आदिपुरुषो महापुरुषः परमः पुरुषस्तथा॥

पुण्योदयो महासारः पुराणपुरुषोत्तमः। स्मितवक्त्रो मितभाषी पूर्वभाषी च राघवः॥

अनन्तगुणगम्भीरो धीरोदात्तगुणोत्तरः। मायामानुषचारित्रो महादेवाभिपूजितः॥

सेतुकृज्जितवारीशः सर्वतीर्थमयो हरिः। श्यामाङ्गः सुन्दरः शूरः पीतवासा धनुर्धरः॥

सर्वयज्ञाधिपो यज्ञो जरामरणवर्जितः। शिवलिङ्गप्रतिष्ठाता सर्वाघगणवर्जितः॥

परमात्मा परं ब्रह्म सच्चिदानन्दविग्रह। परं ज्योतिः परं धाम पराकाशः परात्परः॥

परेशः पारगः पारः सर्वभूतात्मकः शिवः। एतत् श्रीरामचन्द्रस्य नाम्नामष्टोत्तरं शतम्॥

गुह्याद्गुह्यतमं देवि तव स्नेहात् प्रकीर्तितम्। जप्यन्ते प्रेमभावेन सर्वाभीष्टदायकम सर्वदा॥

सीताराम सीताराम सीताराम कहिये।
जाही विधि राखे राम, ताहि विधि रहिये।
मुख में हो राम नाम, राम सेवा हाथ में।
तू अकेला नाहीं प्यारे, राम तेरे साथ में।
विधि का विधान जान, हानि लाभ सहिये।
जाही विधि राखे राम, ताहि विधि रहिये। सीताराम, सीताराम
किया अभिमान तो फिर मान नहीं पायेगा।
होगा प्यारे वही जो श्रीराम जी को भायेगा।
फल आशा त्याग शुभ काम करते रहिये।
जाही विधि राखे राम, ताहि विधि रहिये। सीताराम, सीताराम
जिन्दगी की डोर सौंप हाथ दीनानाथ के।
महलों में राखे, चाहे झोपड़ी में वास दे।
धन्यवाद निर्विवाद, राम राम कहिये।
जाहीं विधि राखे राम, ताहि विधि रहिये। सीताराम, सीताराम
आशा एक राम जी से दूजी आशा छोड़ दे।
नाता एक रामजी से, दूजा नाता तोड़ दे।
साधू संग राम रंग, अंग अंग रंगिये।
काम रस त्याग प्यारे, राम रस पगिये॥
सीताराम सीताराम, सीताराम कहिये।
जाहि विधि राखे राम, ताहि विधि रहिये। सीताराम, सीताराम

अनन्त श्री गुरुदेव बाबा रामदास जी महाराज (करह) का कृपा प्रसाद

बंदउँ गुरु पद पदुम परागा। सुरुचि सुबास सरस अनुरागा ॥1॥ बाल (01)
गई बहोर गरीब नेवाजू। सरल सबल साहिब रघुराजू ॥2॥ बाल (13)
गुरु पितु मातु महेश भवानी। प्रनबउँ दीनबन्धु दिनदानी ॥3॥ बाल (15)
महावीर विनबउँ हनुमाना। राम जासु जस आप बखाना ॥4॥ बाल (17)
मंगल भवन अमंगल हारी। द्रवउ सो दसरथ अजिर बिहारी ॥5॥ बाल (112)
बार-बार मांगउँ कर जोरें। मनु परिहरै चरन जनि भोरें॥ 6॥ बाल (342)
अब करि कृपा देहु बर एहू। निज पद सरसिज सहज सनेहू ॥7॥ अयो. (107)
जोरि पानि बर मांगउँ एहू। सीय राम पद सहज सनेहू॥ 8॥ अयो. (197)
सीता राम चरन रति मोरें। अनुदिन बढ़उँ अनुग्रह तोरें॥ 9॥ अयो. (205)
संतत मो पर कृपा करेहू। सेवक जानि तजहू जनि नेहू॥ 10॥ अरण्य (06)
जो कोसल पति राजिव नयना। करुउँ सो राम हृदयँ मम अयना ॥ 11 ॥ अरण्य (11)
यह वर मांगउँ कृपा निकेता। बसहु हृदय श्री अनुज समेता॥ 12॥ अरण्य (13)
नाथ जीव तव माया मोहा। सों निस्तरई तुम्हारेहि छोहा॥ 13 ॥ किष्कि. (03)
अतिसय प्रबल देव तव माया। छूटइ राम करहु जौ दाया॥ 14॥ किष्कि. (21)
तात कबहुँ मोहि जानि अनाथा। करिहहिं कृपा भानुकुल नाथा ॥15 ॥ सुन्दर (07)
कबहुँ नयन मम सीतल ताता। होइहहिं निरखि स्याम मृदु गाता ॥ 16 ॥ सुन्दर (14)
दीन दयाल विरिदु संभारी। हरहु नाथ मम संकट भारी॥ 17॥ सुन्दर (27)
अब कृपाल निज भगति पावनी। देहु सदा सिव मन भावनी॥ 18॥ सुन्दर (49)
कृपा बारिधर राम खरारी। पाहि पाहि प्रनतारति हारी॥ 19 ॥ लंका (70)
अब सोइ जतन करहु तुम्ह ताता। देखौं नयन स्याम मृदु गाता॥ 20 ॥ लंका (1[illegible]8)
मामभिरक्षय रघुकुल नायक। धृत बार चाप रुचिर कर सायक ॥21॥ लंका (115)
रघुनन्द निकंदय द्वंद्वघनं। महिपाल बिलोकय दीन जनं॥ 22 ॥ उत्तर (14)
भूप मौलि मनि मंडन धरनी। देहि भगति संसृति सरि तरनी॥ 23 ॥ उत्तर (35)
मामवलोकय पंकज लोचन। कृपा विलोकनि सोच विमोचन ॥ 24 ॥ उत्तर ([illegible]1)
बार बार वर मांगउँ हरषि देहु श्रीरंग। पद सरोज अनपायनी भगति सदा सतसंग॥

॥ श्री एकादशमुखी हनुमान जी ॥

सिद्ध तपोभूमि श्री करह आश्रम

ग्राम घनेला, जिला–मुरैना (म.प्र.)

न्यौछावर : रु. 15/-